मानस-रस-धारा



राघव किंकरी
डा० निर्मल बांगा

श्री गणेशाय नमः   श्री सीतारामाभ्याम् नमः



मानस-रस-धारा

राघव किंकरी

डा० निर्मल बांगा

राघव प्रकाशन, सहारनपुर

© : राघव किंकरी **डा०निर्मल बांगा**

संस्करण : **प्रथम, 2022**

आवरण : विपुल मित्तल
विशेष सहयोग : आदित्य नारायण देव

लेजर टाइपसैटिंग : **आकार, भगत सिंह मार्ग, सहारनपुर**

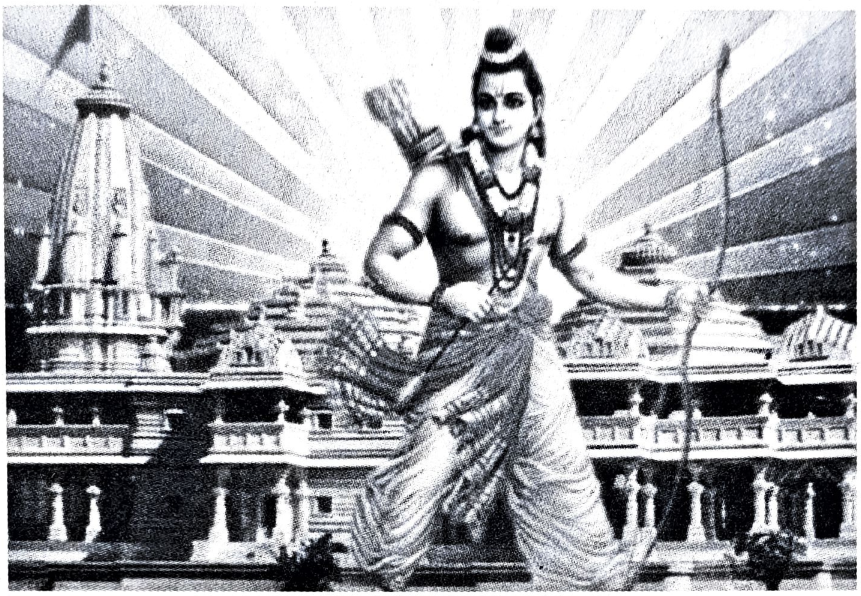
प्रकाशक : **राघव प्रकाशन,**
सहारनपुर (उ.प्र.)

मुद्रक : सृजन प्रेस, नगर, सहारनपुर

मूल्य : 100/- रुपये (पेपर बैक)

Manas-Ras-Dhara *by Raghav Kinkri* ***Dr. Nirmal Banga***
Rs. 100/–(Paper Back)

समर्पण



परम पिता परमात्मा के पदकञ्जों में कोटिशः नमन करते हुए, श्री गुरु चरणों का वन्दन करते हुए, माता-पिता से मिले संस्कारों से अपने जीवन की धन्यता मानते हुए, गोलोकवासी पति के अदृश्य भाव से प्रेरित होते हुए, संतों-महापुरुषों के आशीर्वाद को किये गये सत्कार्य की प्रेरणा स्वीकारते हुए 'मानस रस धारा' अपने इष्ट राघवेन्द्र सरकार को समर्पित करती हूँ।

– राघव किंकरी

आत्म-निवेदन

वस्तुतः मूल प्रेरक शक्ति तो राघवेन्द्र सरकार ही है जैसा कि तुलसी बाबा ने कहा है *'उर प्रेरक रघुवंश विभूषण'*। हम जो भी साधारण कार्य अथवा सत्कार्य करते हैं किसी को निमित्त बनाकर, उस से कहलवा कर प्रभु ही हमें प्रेरणा देते हैं। पहले 'भागवत रसामृत' ग्रन्थ की प्रेरणा हुई। फिर भक्तों के माध्यम से कहलवाया 'विस्तार नहीं समास चाहिए तो 'भागवत-रसधारा' जो सूक्ष्म आकार में थी परन्तु पूरी भागवत का सार लिए हुए, उसका प्रणयन कराया। आज के तकनीकी युग में लोगों के पास समय का अभाव है। उन्हें सार चाहिए विस्तार नहीं। श्रीमती पूर्णिमा भावन को माध्यम बनाया। उन्होंने 'तुलसी बाबा की रामचरितमानस का संक्षेप में गायन किया जाए' कुछ जिज्ञासुओं की ओर से आग्रह किया। सत्प्रेरणा मिली, राम जी की अहेतुकी कृपा हुई। संतों के आशीर्वाद के फलस्वरुप रामचरितमानस का संक्षिप्त रुप 'मानस-रस-धारा' का लेखन हुआ। राघवेन्द्र सरकार से मैं प्रार्थना करती हूँ कि ऐसी ही सत्प्रेरणा करवाते रहें और किंकरी को सेवा का सुअवसर मिलता रहे।

राघव किंकरी

डॉ. निर्मल बांगा

॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥

श्री. शरणागत आश्रम ट्रस्ट

श्रीजानकी वल्लभ मार्ग, रामनगर कालोनी,
वृन्दावन. फोन : ४४५१२२.

बिहारीदास
संस्थापक ट्रस्टी

दिनांक : 11 अगस्त 2021

- चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातक नाशनम् ॥

- त्रेता काव्य निबन्ध लिखी शत कोटि रामायण ।
एक अच्छर उद्धरै ब्रह्महत्यादि पलायन ॥
(भक्तमाल)

सरल हृदया, भक्ति रस प्लावित, राघव किंकरी निर्मला गंगा जी के, हृदय के भाव "मानस रस धारा" नामक ग्रन्थ में पढ़कर विशेष उल्लास हुआ

श्रीराघव का चरित्र इतना सरस है, कि जो भी अपना चित्त लगाता है वह कवि बन जाता है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में यह बात बारबार कही है "कहि न सकत शारद, शेष, महेश"

मानस रसधारा के ये पंक्तियाँ कितनी मधुर हैं। राम को घट में बसाना है। तो नित्य इसको गाना है॥ राम राम में रमेंगे राम। देंगे तुमको यह विश्राम।

मङ्गलमय कामना के साथ

संत चरण रज याचक
बिहारीदास

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



श्री भक्तमाल कुञ्ज

संस्थापक : आचार्य प्रवर **श्री अजयशरण जी महाराज**

(श्रीमद्भागवत कथा, श्रीरामकथा, श्रीभक्तमाल कथा एवं श्री निताई-गौर कथा के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता)



चैतन्य विहार, बुर्जा रोड
(न्यू रंग मन्दिर के सामने)
श्रीधाम वृन्दावन-281 121

Mob. : 09219669927, 09458076266
Email : ajaysharanji28@gmail.com

शुभाकांक्षा

॥ श्रीराधा सर्वेश्वरो विजयते ॥

सर्वप्रेमी जनन कूँ श्रीरामजी की रसमयी लीलान में प्रवेश मिल सकें, याही लियें राघवकिंकरी श्री निर्मल बांगा जी नें **'मानस-रस-धारा'** नामक पुस्तक कौ लेखन कियौ है। यह मानस रस धारा सर्व प्रेमी जनन के हृदय में आनन्द प्रदान करिकै श्रीरामजी के स्वरूप कूँ दरसावै, यही मेरे मन कौ विश्वास है।

आचार्य अजय शरण

(आचार्य अजयशरण)
वृन्दावन

Dr. Niraj Agarwal
M.B.B.S., M.S. (Ortho)
Consultant Orthopaedic Surgeon
Managing Director

GOPINATH HOSPITAL
(A unit of Delhi Orthopaedic Center
& Nursing Home Pvt. Ltd.)



मंगलमयी शुभकामना

मंगल भवन अमंगल हारी, रामकथा जन-जन को प्यारी।
तारो राम प्रजा है थारी, जैसे तुमने निर्मल तारी।
राम रूप में नारायण ने, लिया अवध अवतार,
दशरथ तारे, रावण तारा, किया जगत उद्धार,
धरती तारी, युग युग तारे, किया किंकरी प्यार,
सर्वे भवन्तु सुखिन: की विनती बारम्बार।

भागवत रसामृत रचकर बही भागवत धारा,
मानस रस धारा रूप में सेतु सिंधु है न्यारा,
रामकृपा से निर्मल मां ने, रामायण संक्षिप्त करी,
समय बन्ध को निर्बल करती, जन मानस की पीड़ हरी।

तुलसी ने तेरे द्वार, बाल्मीकि को सरल किया,
राघव किंकरी निर्मल बांगा ने तुलसी को भी तरल किया।

शुभकामना, शुभ भावना, शुभ-आकांक्ष हमारी है,
मानस-रस-धारा रूप में, राम जीवनी न्यारी है।
शिव शक्ति की ममता को जन का शत शत वंदन है,
निर्मल कृति को हम सबका हार्दिक अभिनंदन है।
कठिन समय, कुंदन कसौटी, धर्म और ये धीरज है,
उर आभार, परिवार सहित, राघव चरणों में नीरज है।

- डॉ. नीरज अग्रवाल
अस्थि रोग विशेषज्ञ एवम् निदेशक
गोपीनाथ अस्पताल, भिवाड़ी)

पूर्व अध्यक्ष
भारत विकास परिषद, भिवाड़ी
रोटरी क्लब ऑफ भिवाड़ी
गोपीनाथ पुस्तकालय, भिवाड़ी
इंडियन मेडिकल ऐसासिएशन, भिवाड़ी

A Multispecility, 30 Bedded, E.S.I. Corp. Approved Hospital.

H - 226, Indl. Area, Bhiwadi. Ph. : 01493-223543, Fax : 223843, E-mail : gopinathdrniraj@yahoo.com

Estd. 1989

SHIVA NETRALAYA

Your vision is our focus

SHIVA NETRALAYA

(30 सालों से आपकी सेवा में)

डा. अनन्त कुमार अग्रवाल

एम.एस. (आप्थो)

नेत्र रोग विशेषज्ञ

गुप्ता हॉस्पिटल के सामने
हकीकत नगर मोड, सदर थाना रोड
सहारनपुर-247001 (उ०प्र०)
मो.: 9068884946, 9068884947

समय : प्रातः 10 बजे से सायं 7.30 बजे तक — रविवार अवकाश



'तुलसी' क्रत रामचरित्र मानस का, मानस - रस धारा है सार!
संक्षिप्त रूप ही सब को रुचिकर, नहीं चाहता कोई विस्तार !!

इसी भाव को मन में संजोये, राघव किंकरी ने यह प्रयास किया!
छोटे से ही कलेवर में "मानस" का सारा भाव दिया !!

महिमामयी मानस - रस धारा, जन-जन का कल्याण करें !
श्रद्धावान पाठक के सारे, पाप - ताप - संताप हरे !!

श्री राम प्रभु की निर्मल पर, ऐसी ही कृपा बनी रहे !
गरिमामयी सेवा की गंगा, अविरल उन के मन में बहे !!

डॉ. अनन्त कुमार अग्रवाल

आभार

कोई भी कार्य अकेले सम्पन्न नहीं किया जा सकता भले ही श्रेय किसी एक को मिल जाये, परन्तु उसमें बहुत लोग जुड़े हुए होते हैं। इसी प्रकार '**मानस-रस-धारा**' की रचना में किसी का आशीर्वाद, किसी की प्रेरणा, किसी के द्वारा मनोबल बढ़ाया जाना आदि-आदि का जुड़ाव है।

सर्वप्रथम प्रातः स्मरणीय एवं वन्दनीय भक्तमाली परम श्रद्धेय बिहारी दास जी का एवं परम सम्मानीय आचार्य श्री अजय शरण जी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी सत्प्रेरणा एवं आशीर्वाद मुझे सदा मिलता रहता है।

डा० नीरज अग्रवाल (भिवाड़ी) और डा० अनन्त अग्रवाल जी (सहारनपुर) की मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर, **मानस-रस-धारा** के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मैं अपने अनुज कृष्णलाल मिड्ढा एवं सुरेन्द्र पाल सचदेव का, जो रचना तैयार होते ही प्रकाशन के लिए उत्सुक रहते हैं, का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। श्रीमती स्नेहा अंकित डाटा द्वारा **मानस-रस-धारा** के टंकण कार्य को बड़ी तन्मयता से किये जाने के

लिए मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। श्रीमती सुनीता भारद्वाज, श्रीमती अंजलि, श्रीमती ममता महावर के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जो निरन्तर गतिशीलता के लिए प्रेरक रही।

पुत्र पुनीत, पुत्रवधु गीता, पौत्री गौरी, पौत्र राघव, पुत्री राशि जामाता राकेश, दौहित्री सृष्टि एवं तनीषा आहूजा के स्नेहिल भाव के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

अन्त में सभी सन्तों व महापुरुषों के चरणों में प्रणाम करते हुए एवं ज्ञात–अज्ञात उन सबको जो इस रचना के प्रणयन में किसी भी प्रकार, कहीं भी सहयोगी बने हैं, उन सब के प्रति अपना विशेष आभार प्रकट करती हूँ।

– **राघव किंकरी**

डॉ. निर्मल बांगा



मानस-रस-धारा का महात्म्य

मानस-रस-धारा में राम कथा। करती हर जन की दूर व्यथा।। 1

रामकथा की महिमा अपार। संत जन करते इसे अति प्यार।। 2

सब संदेहों की हर्ता। जन मानस रंजन कर्ता।। 3

जीव के मोह का करती नाश। पूर्ण होती सबकी आश।। 4

रामकथा सुन्दर चिन्तामणि। सब संकट का निवारण करणि।। 5

रामकथा सुन्दर करतार। संशय विहग उड़ावन हार।। 6

राम कथा करो नित्य श्रवण। दूर हो जाये सारी तपन।। 7

घोर अन्धेरे में यह प्रकाश। भरती नयी उमंग और आश।। 8

प्राणों में करे जीवन संचार। भव सागर से करती पार।। 9

रामकथा दृढ़ नौका है। भवसिन्धु तरने का मौका है।। 10

ले लो भक्तो इस का आधार। मिल जायें पुरुषार्थ चार।। 11

राम को घट में बसाना है। तो नित्य इस को गाना है।। 12

देगी तुम को यह विश्राम। रोम रोम में रमेंगे राम।। 13

राम कथा जो गायेगा। मन चाहा फल पायेगा।। 14

राम कथा का लूँ आधार। निर्मल पे कृपा हो ऐसी अपार।। 15





श्री गणेशाय नमः श्री सीतारामाभ्याम् नमः

मानस-रस-धारा



प्रथम सोपान बालकाण्ड

करते हैं प्रारम्भ रामायण, सब के जीवन की आधार।
गणपति के चरणों में नमन, जो है विघ्न विनाशन हार।। 1
राम जी करो मंगल सबका, भवसागर से कर दो पार।
हनुमत लाल जी आन विराजो, रामकथा से तुम को प्यार।। 2
रामकथा गंगा की धारा, करती जन मन को पावन।
पार्वती जी प्रेम से सुनती, शंकर जी करते गायन।। 3
गुरु चरणों की पावन रज को, अपने मस्तक पर मैं धार।
मानस रस धारा लिखूँ, निमित्त हूँ मैं नहीं रचनाकार।। 4
जब जब विप्र धेनु सुर संतों, पर आता संकट भारी।
तब तब हरि ने ले अवतार, इन सब की विपदा टारी।। 5
लंकाधिपति दशानन ने जब, धरती पर किये बहुत उत्पात।
विप्र संत सुर दुःखी हुए सब, बन्द हुए यज्ञ पूजा पाठ।। 6
उत्पीड़ित होकर के धरा ने, धेनु रुप किया धारण।

ब्रह्मा जी की शरण गई, विनती की करो दुःख का निवारण।। 7
धरा के संग तब सब देवों ने, विष्णु जी की स्तुति करी।
हम सब पर संकट छाये हैं, विपदा कर दो दूर हरि।। 8
संसार के भय को हरने वाले, हम सब को भी निर्भय करो।
शरणागत वत्सल कहलाते हो, हम भक्तों के दुःखों को हरो।। 9
गगन से तब ब्रह्मवाणी हुई, अवतार मैं जल्दी ही लूँगा।
त्रास देने वाली सब शक्तियों, का संहार मैं कर दूँगा।। 10
नारद वचन करुँगा सत्य, शक्ति भी संग लाऊँगा।
अंश भी होंगे साथ में मेरे, अकेला नहीं मैं आऊँगा।। 11
अवधपति दशरथ ने पूर्वजन्म में बहुत कठिन तप किया।
तप से प्रसन्न हो पुत्र बनूँगा, ऐसा वर था मैंने दिया।। 12
वचन भी मेरा पूर्ण होगा, सब को सुख भी मैं दूँगा।
देवों निर्भय हो जाओ तुम, संकट सब मैं हर लूँगा।। 13
पुत्र नहीं है सोच के नृप, दशरथ का मन परेशान हुआ।
गुरु वसिष्ठ के पास गये, और अपने दुःख का बखान किया।। 14
गुरु जी बोले दुःखी न होवो, मन में थोड़ा धीर धरो।
होंगे पुत्र तुम्हारे चार, तुम पुत्रेष्टि यज्ञ करो।। 15
शृंगी ऋषि को बुलवा कर के, यज्ञ सम्पन्न करवाया।
यज्ञ से प्रकटे देवता अग्नि, चरु राजा को पकड़ाया।। 16
अग्नि देव से पाके चरु को, राजा ने उसके दो भाग किये।
एक दिया कौशल्या को, दूजे के फिर दो भाग किये।। 17
कैकेयी और सुमित्रा ने, उन दोनों भागों को पाया।
गर्भवती हुई तीनों रानियाँ, सब लोकों में अति आनंद छाया।।18

परम प्रभु के प्रकट होने का, मंगल अवसर जब आया।
योग लगन ग्रह वार तिथि, सब ने अनुकूलता को पाया।। 19
नौमी तिथि मधुमास था पावन, शुक्ल पक्ष नक्षत्र अभिजित।
मध्य दिवस का सुन्दर काल था, संतों का मन हुआ हर्षित।। 20
देवों ने बरसाये पुष्प, आकाश में दुन्दुभि बजने लगी।
प्रकटे दीनदयाल प्रभु, आई अति सुन्दर शुभ घड़ी।। 21
अनोखी छवि और श्याम वर्ण, चारों भुजाओं में हैं आयुध।
विलक्षण रूप निहार के माता, कौशल्या को रही न सुध बुध।। 22
प्रभु मुसकाये ज्ञान हुआ, तब माता ने कहे ये वचन।
ऐश्वर्य को तजकर प्रभु, बालक रूप करो धारण।। 23
तब प्रभु ने शिशु लीला की, और रुदन प्रारम्भ किया।
सुना रुदन सब दासियाँ दौड़ी, हर्षित हो गया सब का हिया।। 24
राजा परम आनन्दित हुए, खुश होकर बाजे बजवाये।
सूचना पाकर गुरु वसिष्ठ जी, प्रभु दर्शन को हैं आये।। 25
सूर्यवंश में आये रघुवर, सूर्य की खुशी का ठिकाना नहीं।
एक मास का हो गया एक दिन, मर्म किसी ने जाना नहीं।। 26
काकभुसुंडि संग शंकर भी, प्रभु दर्शन को जाते हैं।
इस रहस्य को भोले बाबा, पार्वती को बताते हैं।। 27
कैकेयी ने एक और, सुमित्रा ने दो सुत जाये हैं।
चारों पुत्रों को पाकर, राजा दशरथ हर्षाये हैं।। 28
कुछ दिन बाद नामकरण, करने को वसिष्ठ जी आते हैं।
आनन्द राशि कौशल्या सुत का, नाम राम बताते हैं।। 29
कैकेयी सुत का नाम भरत, सुमित्रा के लक्ष्मण रिपुदमन।

नामकरण सम्पन्न हुआ ये, चारों शील रूप गुण के सदन।। 30

पुत्रों की सुन्दर छवि निरख, माताएँ जाती बलिहारी।
भव बन्धन को काटने वाले, राघव की महिमा न्यारी।। 31

एक बार मां कौशल्या ने, स्नान कराया शृंगार किया।
और पालने में इन्हें पौढ़ा कर, पूजा गृह प्रस्थान किया।। 32

वहाँ इन्हें भोजन करता देख के, माँ का मन अति घबराया।
हुई अधीर वह दौड़ी और, बालक को सोता ही पाया।। 33

इहाँ उहाँ दुई बालक देखा, माँ की हो गई भ्रमित मति।
प्रभु मुसकाये दर्शन कराया, विराट रूप का माँ को तभी।। 34

डर गई माता ये तो प्रभु हैं, मैंने सुत अपना जाना।
प्रभु ने अपनी माया फैलायी, तो माँ ने यह मति भ्रम माना।। 35

मन कर्म वचन से जो हैं अगोचर, दशरथ आँगन में विचरते हैं।
राजा भोजन को हैं बुलाते, पर वे न सखाओं को तजते हैं।। 36

माँ कौशल्या जब हैं बुलाती, ठुमुक ठुमुक प्रभु चलते हैं।
वेद भी नेति नेति कहते, पार कहाँ पा सकते हैं।। 37

देख के सुन्दर बाल लीलाएँ, माताएँ जाती हैं वारी।
शारद शेष महेश और वेद, गाते इनकी महिमा भारी।। 38

कुमार हुए जब सारे भ्राता, जनेऊ गुरु ने पहनाया।
विद्या पाने हेतु सब को, गुरु आश्रम में भिजवाया।। 39

थोड़े ही समय में विद्या पा ली, यह नहीं है कौतुक भारी।
स्वासों में उनकी वेद हैं व्यापे, करते वे लीला न्यारी।। 40

मात-पिता गुरु वंदन करते, प्रातः जब वे उठते हैं।
पुरवासी सब होंये सुखारी, प्रयास वे ऐसा करते हैं।। 41

गाधितनय मुनि विश्वामित्र को, राक्षस बहुत सताते हैं।
पूजा पाठ में बाधा पड़ती, न ही यज्ञ कर पाते हैं।। 42
तब नृप दशरथ के पास जाकर, अपनी परेशानी बतलाई।
दुष्टों के संहार के हेतु, मांगे राम लखन भाई।। 43
दशरथ ने की आनाकानी, वसिष्ठ जी उन्हें समझाते हैं।
राम लखन को संग में लेकर, मुनि आश्रम की ओर जाते हैं।।44
राह में ताड़का सुबाहु मारा, मारीच पे शर से प्रहार किया।
सब दैत्यों का कर के विनाश, मुनि के मन को सुख है दिया।। 45
कुछ दिन वास के बाद मुनि ने, राम लखन को बतलाया।
राजा जनक धनुष यज्ञ करेंगे, उस में उनको बुलवाया।। 46
राम लखन भी उत्सुकता से, मुनि के संग में जाते हैं।
राह में मुनि जी राघव से, अहिल्या उद्धार करवाते हैं।। 47
जनकपुरी में पहुँचे मुनिवर, राजा जनक ने सम्मान किया।
राम के अनुपम सौन्दर्य ने, राजा को अचम्भे में डाल दिया।। 48
अवध के राजकुमार हैं दोनों, मुनिवर परिचय देते हैं।
यज्ञ रक्षण को मेरे संग में, राजा दशरथ ने भेजे हैं।। 49
सुन्दर सुखद सदन में ठहरा कर, जनक जी ने प्रस्थान किया।
ऋषि संग दोनों भाइयों ने, भोजन कर के विश्राम किया।। 50
मुनिवर से अनुमति लेकर, वे नगर भ्रमण को जाते हैं।
उन का सुन्दर रूप निरख कर, सब सुध बुध विसराते हैं।। 51
सब के मन में यह अभिलाषा, सीता के दूल्हा राम बनें।
पर सुकुमारता देख के सोचते, सम्भव तभी, राजा प्रण को तजें।। 52
लौट के दोनों भ्राता मुनिवर का आदेश निभाते हैं।

शयन काल में दोनों भाई, गुरुवर के चरण दबाते हैं।। 53
प्रातः गुरु से पहले जग कर, नैत्यिक क्रियायें करते हैं।
पूजा हेतु पुष्प लाने को, पुष्प वाटिका जाते हैं।। 54
सखियों के संग सीता गौरी, पूजन को मंदिर आयीं।
एक सखी संग छोड़ के उनका, पुष्प वाटिका में धायी।। 55
राजकुमारों की प्यारी छविं को, देख के वह हर्षाती है।
सीता को बतलाने हेतु, दौड़ी दौड़ी वह आती है।। 56
तुम को क्या हुआ सखियों ने पूछा, तो उन को बतलाती है।
'गिरा अनयन नयन बिन वाणी', मन की दशा समझाती है।। 57
अद्भुत प्रेम दशा है उसकी, नयनों से प्रेमाश्रु बह रहे हैं।
प्रभु के दर्शन के प्रभाव को, अश्रु बिन्दु कह रहे हैं।। 58
बोली पुष्प वाटिका में, दो सुन्दर राजकुमार आये।
संग ले जाकर सीता को, उनके दर्शन करवाये।। 59
सिय शोभा को देख के राम जी ने मन में है सुख पाया।
धनुष यज्ञ है इनके कारण, ऐसा लक्ष्मण को बतलाया।। 60
शुभ सूचक जब अंग है फड़के, राम जी ऐसा मानते हैं।
रघुवंशी कुपंथी न होते, कारण विधाता ही जानते हैं।। 61
जानकी राम की छवि निरख कर, लोचन मग से उर लायी।
नजर न हटती उनके मुख से, सुध बुध अपनी बिसराई।। 62
स्मरण कराया सखियों ने, गौरी पूजन को आये हैं।
पूजा से प्रसन्न हो माँ ने, सीता को वचन सुनाए हैं।। 63
सत्य आशीष हमारी सुनो, जो अभिलाषा है मन में।
पूरी अवश्य होगी पुत्री, करो विश्वास देवर्षि वचन में।। 64

गौरी को अनुकूल जान के, सीता जी आनन्द पाती हैं।
बायें अंग फड़कने लगे, हर्षित हो भवन में आती हैं।। 65
पुष्प दिये राघव ने मुनि को, पूजा सम्पन्न करवाते हैं।
मुनिवर से आशीष को पाकर, दोनों भ्राता सुख पाते हैं।। 66
राजा जनक से आमन्त्रण पा मुनि, धनुष यज्ञ में जाते हैं।
दोनों भाइयों को संग लिया, पुरवासी समाचार पाते हैं।। 67
भीड़ लगी जब वहाँ पे भारी, राजा सेवक बुलवाते हैं।
सब के स्तर के अनुकूल ही, बैठने की व्यवस्था कराते हैं।। 68
जैसी जिसकी भावना थी, प्रभु राम को वैसा ही पाया।
दुष्ट राजा सब मन में डरे, असुरों का मानो काल आया।। 69
भक्तों ने इष्ट छवि देखी, योगी को परमतत्व दिखता है।
हर पुरवासी को दर्शन करके, नयनों को सुख मिलता है।। 70
ज्ञानी उनके विराट रूप को, देख के अति हर्षाता है।
जनक जी का हर सगा सम्बन्धी, उनमें अपनापन पाता है।। 71
सब से सुन्दर मंच पे मुनि संग, दोनों भाइयों को बिठलाया।
स्वयंवर हेतु सखियों के संग, अपनी पुत्री को बुलवाया।। 72
कर-कमलों में ले जयमाला, सीया रंगभूमि में आती हैं।
देवता बरसाते हैं सुमन, गीत अप्सराएँ गाती हैं।। 73
हर्षित होकर बन्दीजन, राजा की प्रतिज्ञा सुनाते हैं।
शिव के धनुष को तोड़ने वाले, को सीया का वर बताते हैं।। 74
विभिन्न द्वीपों के प्रतापी राजा, बल अपना आजमाते हैं।
पर शिव धनुष को तिल भर भी, भूमि से हटा न पाते हैं।। 75
बनते हैं उपहास के पात्र, शीश झुका लौट आते हैं।

रणधीरों की देख दशा, राजा मन में अकुलाते हैं।। 76
बोले पृथ्वी वीर विहीन है, मुझ को ऐसा होता जो ज्ञात।
तो मैं कठिन प्रतिज्ञा न करता, हँसी न होती जग में भ्रात।। 77
चैन कभी न पाऊँगा, यदि पुत्री रहती है कुंआरी।
प्रतिज्ञा को यदि तोड़ता हूँ , तो लगता है पाप भारी।। 78
वीर विहीन मही सुनकर, लक्ष्मण जी रोष में कहते हैं।
रघुवंशी का हो अपमान, हम यह कभी न सहते हैं।। 79
कमलनाल ज्यों टूटती है, धनुष को ऐसे तोड़ दूँगा।
सारे ब्रह्माण्ड को भी कच्चे, घट की भाँति फोड़ दूँगा।। 80
रघुवर से संकेत को पा, लक्ष्मण जी चुप हो जाते हैं।
विश्वामित्र समय शुभ जान, रघुवर को पास बुलाते हैं।। 81
बोले भंजन करके धनुष का, जनक के दुःख को हरना है।
वैदेही से विवाह कर के, उनका प्रण पूरा करना है।। 82
आज्ञा पाकर रघुवर उठे, गुरु चरणों में प्रणाम किया।
जैसे बिजली चमकी हो, क्षण भर में धनुष को तोड़ दिया।। 83
जनक नन्दिनी सीता ने, रघुवर को पहनाई जयमाल।
तीनों लोक प्रफुल्लित हुए, मिथिला वासी हुए निहाल।। 84
देवों ने बरसाये सुमन, जय जयकार लगाई है।
अनुपम सीया राम की जोड़ी, आशीषें सब से पाई हैं।। 85
शिव धनु का भंग होना सुनकर, परशुराम जी आते हैं।
किसने है दुस्साहस किया यह, रोष में वे थर्राते हैं।। 86
लक्ष्मण से विवाद हुआ तो, सब नर नारी डरते हैं।
पर राम जी अपने विनीत स्वभाव से, उनके क्रोध को हरते हैं।। 87

राम जी के प्रभाव को जान, स्तवन उनका करते हैं।
दोनों भाइयों से क्षमा है माँगी, फिर वन की ओर चलते हैं।। 88
कौशिक मुनि राजा जनक से बोले, वंश व्यवहार निभाना है।
राजा दशरथ बारात ले आयें, संदेशा भिजवाना है।। 89
जब राजा दशरथ जनक के दूतों, से वह पाती पाते हैं।
राम लखन की कुशल जानकर, मन में अति हर्षाते हैं।। 90
राम विवाह की सूचना देने, गुरु आश्रम में जाते हैं।
बारात की करो तैयारी राजा, गुरु से आदेश वो पाते हैं।। 91
हर्षित होकर माताओं ने, मंगल गीतों को गाया है।
अवधपुरी के हर नर नारी, के मन आनंद छाया है।। 92
स्वागत हेतु मिथिला नरेश ने, मिथिला पुरी सजवाई है।
सुन्दर शुभ मुहूर्त में, बारातियों की करी अगवाई है।। 93
गुरु वसिष्ठ के दर्शन कर, राम लखन ने आनन्द पाया है।
दोनों भाइयों ने गुरुदेव के, चरणों में शीश नवाया है।। 94
राम लखन को अङ्क में भर कर, दशरथ ने नव जीवन पाया है।
भरत रिपुदमन को राम लखन ने, परस्पर गले लगाया है।। 95
मेरे राम बने हैं दूल्हा, सुंदर तुरंग पर विराजते हैं।
कोटि कामदेव भी उनकी, समता न कर पाते हैं।। 96
शारद शेष महेश देवेन्द्र, अपना भाग्य सराहते हैं।
दशो दिशाओं में दुंदुभि बाजी, देव सुमन बरसाते हैं।। 97
राम का अनुपम रूप निरख कर, सीया माँ अति सुख पाती हैं।
मंडप में आये हैं रघुवर, नारियाँ मंगल गाती हैं।। 98
सखियों संग सीता भी आई, मुनिवर मंत्र उचारते हैं।

विप्र वेष में सारे वेद, विवाह विधि सम्पन्न कराते हैं।। 99
गुरु वसिष्ठ से मिथिलेश्वर, जब आदेश को पाते हैं।
तब श्रुतिकीर्ति, उर्मिला मांडवी, को मंडप में बुलाते हैं।। 100
लखन उर्मिला, शत्रुघ्न श्रुतिकीरति, भरत मांडवी की जोड़ी बनी।
चार पुत्रवधुओं को पाकर, दशरथ सा न कोई धनी।। 101
कन्यायें विदा अब करनी हैं, सोच के सब अकुलाते हैं।
राजा जनक वैरागी होकर भी, अश्रु रोक न पाते हैं।। 102
शुभ मुहूर्त में राजा दशरथ, अवध लौट के आते हैं।
स्वागत में सब अवध के वासी, सारी पुरी को सजाते हैं।। 103
परिछन की करके तैयारी, माताएँ सजाती सोने के थाल।
पत्नियों संग सब राजकुमारों को, देख के होते सब हैं निहाल।। 104
ज्यों अंधे ने लोचन, रंक ने पारसमणि को पाया है।
सिया राम का दर्शन पाकर, ऐसा ही आनन्द छाया है।। 105
जो जो कामना लेकर याचक, दशरथ द्वार पे आते हैं।
सम्मान सहित उसे पूरी पाकर, आशीष देते हुए जाते हैं।। 106
अवधपुरी के हर नर नारी, के मन आनंद भारी है।
राम सीया की अनुपम जोड़ी, देख के सब बलिहारी हैं।। 107
विश्वामित्र मुनि के कारण ही, आनंद यह पाया है।
परिवार सहित अवधेश ने उनके, चरणों में शीश नवाया है।। 108

इति बालकाण्ड सम्पूर्ण

मानस-रस-धारा



द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड

शीश पे गंगा, भाल पे चंदा, बैठी हैं माँ गिरिजा साथ।
उन शंकर के चरणों में, मेरा नमन जोड़ दोनों हाथ।। 1
अयोध्या काण्ड अब गायेंगे, वन लीला का करेंगे श्रवण।
प्रारब्ध भोग जरुरी बताते, धारण करके मानव तन।। 2
जब से राम विवाहित होकर, अवधपुरी में आये हैं।
होता नित नव मंगल सब का, मनचाहा सुख सब पाये हैं।। 3
एक ही कामना सब के मन की, राम युवराज का पद पायें।
शङ्कर जी से विनती करते, राम सुयश को सब गायें।। 4
एक दिन दर्पण में राजा ने, देख श्रवण समीप श्वेत केश।
राज्य सौंप दो राम को अब, मानो पाया यह उपदेश।। 5
अपने मनोरथ को जाकर, गुरु वसिष्ठ को सुनाया है।
विलम्ब न कीजे, युवराज बनाएँ, आदेश यह उनसे पाया है।। 6
सारी सभा यह सूचना पाकर, मन में बड़ा सुख पाती है।

तोरण और पताकाओं से, सारी नगरी सज जाती है।। 7
माता कौशल्या और सुमित्रा, का मन अति हरषाया है।
दास दासियों ने राजा रानी से, सुन्दर बख्शीशों को पाया है।। 8
राम सीया के जब सारे, शुभ अङ्ग फड़कते हैं।
भरत आगमन के सूचक हैं, ऐसा विचार वो करते हैं।। 9
ज्यों चोर को चाँदनी रात न भाती, त्यों देवता मन में मनाते हैं।
राम का राज्याभिषेक न हो, शारदा को विनती सुनाते हैं।। 10
देवों का यह विचार न भाया, पर माँ परिणाम को देखती है।
कैकेयी दासी मंथरा की, बुद्धि विनष्ट कर देती है।। 11
अवधपुरी की शोभा मंथरा, के मन को न भाती है।
राम राज्य की सूचना उसके, मन को छलनी कर जाती है।। 12
कैकेयी के मन में वह, द्वेष का भर देती है जहर।
राजा के आते ही कैकेयी, उन पे बरसाती है कहर।। 13
वचन दिया था जो दो वर का, आज उन्हें प्रदान करो।
युवराज बना कर मेरे भरत को, मेरे मन को सुख से भरो।। 14
चौदह वर्ष की अवधि के लिए, वन में राम ने जाना है।
अपनी सत्य प्रतिज्ञा को राजन! आपने आज निभाना है।। 15
भरत मेरा युवराज बने, यह तो मनोरथ प्यारा है।
पर वन में राम को क्यों भेजती हो, उससे क्या वैर तुम्हारा है।। 16
कैकेयी टस से मस न हुई, राजा मूर्छित हो जाते हैं।
लखन सीया भी रघुवर के संग, जाने की इच्छा जताते हैं।। 17
उनके भारी आग्रह को, कोई रोक न पाया है।
राम लखन सिया वन में चले, अवध में शोक समाया है।। 18
सुमन्त्र से राजा कहते हैं, उन के पीछे रथ को दौड़ाओ।

थोड़ा सा जंगल में घुमाकर, उन को वापिस ले आओ।। 19
राम सखा शृंगवेर के राजा, गुह जब सूचना पाते हैं।
सन्यासी वेश में देख के उनको, मन में अति दुःख पाते हैं।। 20
निषाद के भारी विषाद को देख के, लक्ष्मण उन्हें समझाते हैं।
अपने किये कर्मो से ही, प्राणी सुख दुःख पाते हैं।। 21
राम तो पूर्ण ब्रह्म हैं वेद, जिन्हें नेति नेति कहते हैं।
विप्र धेनु सुर संत हेतु, वे नर लीला करते हैं।। 22
वट छीर मंगा प्रातः दोनों भाई, सिर पर जटाएँ बनाते हैं।
देख सुमन्त्र दुःखी हैं होते, नृप का संदेश सुनाते हैं।। 23
वचन का पालन ही मेरा धर्म, सुमन्त्र को वह समझाते हैं।
तात हमारी चिन्ता करें न, यह कह उन्हें वापिस लौटाते हैं।। 24
माँगी नाव है केवट से, अब सुरसरि तट पर आये हैं।
विनती मान के केवट की, चरण अपने धुलवाये हैं।। 25
पार किया जब केवट ने, प्रभु देने लगे उसे उतराई।
बोला केवट कुछ नहीं चाहिए, अपार कृपा मैंने पाई।। 26
फिरती बार मुझे जो देंगे, प्रसाद समझ के करुँगा स्वीकार।
धन्य जीवन अपना किया, प्रभु चरणों में किया नमस्कार।। 27
पति देवर संग कुशल मैं लौटूँ , मनोरथ माँ को बतलाया।
प्रसन्न हुई माँ गंगा से, सीता ने आशीषों को पाया।। 28
कुछ दिन साथ रह सेवा करूँगा, गुह अपनी इच्छा जताते हैं।
सखा के प्रेम भाव को जान, प्रभु संग उन्हें ले जाते हैं।। 29
तीर्थराज प्रयाग में पहुँचे, सीया लखन को महातम बतलाया।
भरद्वाज मुनि के आश्रम जाकर, कन्द मूल फल को खाया।। 30
लेके विदा जब आगे बढ़े तो, तेज पुंज तापस एक आया है।

पहचान के अपने इष्ट को उसने, चरणों में शीश नवाया है।। 31
रंक को जैसे पारस मिलता, वैसा सुख मन में पाया है।
रघुनाथ ने अतिशय प्रेम से उनको, अपने गले लगाया है।। 32
मग में ग्राम तिय जो मिलती, चरणों में शीश नवाती हैं।
अपने सरल स्वभाव से सिया, आशीषें उन से पाती हैं।। 33
राम लखन बीच सोहती सिया, ज्यों ब्रह्म जीव विच माया।
जो भी उनकी छवि निहारते, विलक्षण आनंद है पाया।। 34
बाल्मीकि आश्रम में पहुँचे, चरणों में शीश नवाया है।
त्रिकालदर्शी मुनिवर को, वन आने का कारण बताया है।। 35
भक्त हृदय में निवास के हेतु, चौदह भवन बताये हैं।
अनुमति लेकर लखन सिया संग, प्रभु चित्रकूट में आये हैं।। 36
कोल किरात के वेश में आकर, देव कुटीर बनाते हैं।
सिया लखन संग रहते हुए प्रभु, मुनियों को सुख पहुँचाते हैं।। 37
राम लखन सिया को वन छोड़, सुमन्त्र अयोध्या आते हैं।
सूचना पाकर दशरथ जी, मन में बहुत अकुलाते हैं।। 38
राम वियोग को न सह पाये, प्राणों का है त्याग किया।
गुरु वसिष्ठ ने भरत बुलाने, हेतु दूतों को भेज दिया।। 39
पिता मरण राम का वन गमन सुन, भरत लाल हुए मन में दुखित।
माँ कैकेयी का यह किया है, उस पर हुए बहुत कुपित।। 40
शत्रुघ्न संग भरत माँ कौशल्या के भवन में आते हैं।
मेरा संमत नहीं है कोई, रोते रोते बतलाते हैं।। 41
भरत को करती दुलार कौशल्या, हृदय से अपने लगाती हैं।
तुम तो राम को प्राण से प्यारे, चिंता क्यों तुम्हें सताती है।। 42
गुरु वसिष्ठ भी आकर के, भरत को धीरज बंधाते हैं।

वेद विधि अनुसार राजा की, दाहादि क्रियायें करवाते हैं।। 43
पित्राज्ञा पालक परशुराम ययाति के उदाहरण सुनाते हैं।
पिता के वचन का करो पालन अब, राजा तुम्हें बनाते हैं।। 44
भरत जी धीरज खो बैठे, सुन कर के गुरु के ऐसे वचन।
राम लखन सिया के वन जाने का, केवल मैं ही हूँ कारण।। 45
मुझे यदि राजा बनाओगे तो, रसा भी जायेगी रसातल।
मैं तो भारी पापी हूँ, व्यर्थ है जीवन का हर पल।। 46
जाकर वन में प्रभु को मनाऊँ, मेरी एक ही अभिलाषा।
रघुवर मुझे अपना मानेंगे, अब यही भरोसा यही आशा।। 47
भरत वचन लगे सबको प्यारे, सब ने किया अभिनंदन।
शोक समुद्र में डूबे सबको, मानो मिल गया अवलम्बन।। 48
प्रभु की संपत्ति मान भरत, सुरक्षा व्यवस्था करते हैं।
राजतिलक की सामग्री भी, साथ में लेकर चलते हैं।। 49
शत्रुघ्न संग पैदल चले तो, माताएँ समझाती हैं।
कृश शरीर प्रजा अनुकरण करेगी, रथ में उन्हें बिठाती हैं।। 50
प्रथम वास किया तमसा पर, दूसरे दिन धेनुमति तीर।
श्रृंगवेरपुर के निकट जब पहुँचे, खबर पाके हुए निषाद अधीर।। 51
संग में सेना लेकर भरत का, वन जाने का क्या कारण।
पर छींक से वृद्ध ने शगुन विचार के, चिंता का किया निवारण।। 52
निषाद सखा हैं रघुवर के, भरत ने बहुत सम्मान दिया।
गंगा पहुँच कर रामघाट में, मानो राम हों अनुभव किया।। 53
सादर कर स्नान गंगा में, हाथ जोड़ माँगा है वर।
राम सिया चरणों में मेरा, स्नेह बना रहे निरन्तर।। 54
निषादनाथ की अगुवाई में, माताओं की पालकी चलवाई।

शत्रुघ्न को संग लिया अब, पैदल चले दोनों भाई।। 55
तीर्थराज प्रयाग पहुँच कर, स्नान त्रिवेणी में करते हैं।
सिया राम चरण रति याचना कर, पुरुषार्थों की चाह भी तजते हैं।।56
तुम सा राम को न कोई प्यारा, बोली त्रिवेणी होकर मुदित।
धन्य कह देवों ने पुष्प बरसाये, भरत का तन भी हुआ पुलकित।। 57
मुनि भरद्वाज का किया दर्शन, भरत को वे समझाते हैं।
सरस्वती ने बुद्धि की दूषित, कैकेयी को निर्दोष बताते हैं।। 58
राम प्रेम का रूप ही हो तुम, मेरा तो ऐसा है विचार।
दर्शन पाकर यहाँ तुम्हारा, जीवन सफल हुआ है हमार।। 59
लखन सिया संग बिनु पनहिं, प्रभु पैदल पैदल चलते हैं।
वेष बना कर मुनियों का वे, जंगल जंगल भटकते हैं।। 60
इस दुःख ताप से छाती जलती, दिन में भूख न नींद है रात।
चैन मिलेगा लौट प्रभु जब, राज करेंगे अवध में हे तात।। 61
सुन्दर वचन भरत के सुनकर, मुनिवर अति हर्षाते हैं।
पहुनाई करने को सबकी, ऋद्धि सिद्धि अनिमादि बुलाते हैं।। 62
रघुवर प्रेम के सामने सारा, वैभव भरत के लिए बेकार।
कब कैसे प्रभु दर्शन पाऊँ, मन में चल रहा एक विचार।। 63
भरद्वाज मुनि को दंडवत करके, चित्रकुट हेतु किया प्रस्थान।
धन्य भरत है मेरे प्रभु भी, जिनका करते हर पल ध्यान।। 64
राम भरत का मिलन न हो, देवता मन में चाहते हैं।
गुरु से पूछते हैं कोई युक्ति, गुरुजी उन्हें समझाते हैं।। 65
जग सारा श्री राम को भजता, राम भरत को भजते हैं।
भक्त के जो अपराध हैं करते, प्रभु क्रोध अग्नि में जलते हैं।। 66
अपराध किया था दुर्वासा ने, फिर वे हुए बहुत दुखित।

ऐसा कोई करो न अनर्थ, राम हो जाएं जिस से कुपित।। 67
राम सदा अपने भक्तों की, इच्छा पूरी करते हैं।
भक्त के प्रेम के बस में होकर, निर्गुण से सगुण भी बनते हैं।। 68
भरत जी राह में चलते हुए, सिया राम लखन को सिमरते हैं।
जहाँ जहाँ राम ने वास किया, प्रणाम वहाँ वहाँ करते हैं।। 69
वय वपु वरन वेष को देख के, लगते हैं ज्यों राम लखन।
पर संग में सिया को न पाकर, मगवासी हो गए चिंता मगन।। 70
एक सयानी सखी उनको, सारी कथा सुनाती है।
भाई को मनाने जा रहे वन में, भरत को बहुत सराहती है।।71
सिया संग दोनों भाई जिस, पर्वत पर करते विश्राम।
गुह जी दिखाते दूर से उसको, भरत जी करते हैं प्रणाम।।72
सिया जी राम को बतलाती हैं, देखा उन्होंने एक स्वप्न।
सब के संग मानों भरत हैं आये, विरह से तप रहा उनका तन।।73
अच्छा नहीं है यह सपना, अशुभ सूचक बतलाते हैं।
मन में आकुल होकर प्रभु, भोले बाबा को मनाते हैं।। 74
उसी क्षण कोल किरात भी आकर, भरत आगमन का बताते हैं।
क्या कारण है सोच के मन में, राम जी बहुत घबराते हैं।। 75
लक्ष्मण के मन में हुई शंका, भरत के मन में है कोई छल।
अपने संग में क्यों लाए, अवध का सारा वे दल बल।। 76
बोले स्वामी! आप सरल हैं, और हैं शील स्नेह के निधान।
सब पर करते प्रीति प्रतीति, जानते सब को अपने समान।। 77
मन में अगर कुटिलाई न होती, तो सेना सहित क्यों आये ये।
राज का मद तो होता ही ऐसा, उस में हैं बौराये ये।। 78
अनुज हूँ आपका, रघुवंशी हूँ, भुजाओं में क्षत्रिय का बल।

समर सेज पे इसको सुलाकर, बताऊँगा राम निरादर का फल।। 79
अत्यन्त रोष में देख लखन, रघुवर उन्हें बतलाते हैं।
'सहसा करि पाछे पछिताही' न बुद्धिमान कहाते हैं।। 80
भरत को राजमद न हो सकता, विश्वास करो मुझ पर भाई।
सूर्यवंश सरोवर का हंस वो, दोष न उसमें रंच राई।। 81
मन्दाकिनी में स्नान किया, भरत मन में अति घबराये।
मेरा आना सुन कर के प्रभु, अन्यत्र कहीं न चले जाएँ।। 82
मंगल शगुन हुए तो निषाद, भरत को धीर बंधाते हैं।
दूर से ही वट छाया में बैठे, राम सिया को दिखाते हैं।। 83
मुनि वेष में बैठे राम सिया, ज्यों मदन रति शोभा पाते हैं।
मुसकाते हुए अपने कर, कमलों को धनुष पे फिराते हैं।। 84
लकुट की भाँति गिर भूमि पर, भरत जी रोते जाते हैं।
प्रेम अधीर हो उन को राघव, अपने गले लगाते हैं।। 85
देख के दोनों का मिलना परस्पर, सब सुध बुध विसराते हैं।
भाई हो तो भरत के जैसा, देवता पुष्प बरसाते हैं।। 86
गुरु वसिष्ठ का करके वंदन, राम लखन आशीषें पाते हैं।
शत्रुघ्न भी राम लखन के, चरणों में शीश नवाते हैं।। 87
कैकेयी माँ से मिलकर रघुवर, उनको निर्दोष बताते हैं।
विधि ने विधान है जैसा लिखा, उसे हम बदल न पाते हैं।। 88
माँ कौशल्या और सुमित्रा के, चरणों में शीश नवाते हैं।
माया से एक पल में ही मिलकर, सब को सुख पहुँचाते हैं।। 89
वैदेही भी माताओं के, चरणों में करती हैं नमन।
तापस वेष में देख के उनको, दुःखी हो गया माताओं का मन।। 90
कोल किरात भिल्ल बनवासी, कन्द मूल फल अंकुर लाते हैं।

बोले प्रभु दर्शन के प्रभाव से, हम धर्म बुद्धि को पाते हैं।। 91
सूचना पाकर राजा जनक का, भी होता है आगमन।
उनको अपने बीच में पाकर, सब को मिला कुछ अवलम्बन।।92
अवध में लौटने की प्रार्थना सुन, प्रभु सब को समझाते हैं।
पिता के वचन का पालन ही, पुत्रों का धर्म बताते हैं।। 93
स्वामी आज्ञा का पालन ही, भरत निज धर्म बताते हैं।
हे करुणाकर! कीजिए वो ही, आप सही जो पाते हैं।। 94
चौदह वर्ष हम वन में रहेंगे, भरत! तुम अवध में लौट जाओ।
राज्य अयोध्या का संभाल के, पिता के वचनों को निभाओ।।95
कृपा कर अपनी पाँवरी दीजे, सिंहासन पे उन्हें बिठाऊँगा।
धरोहर समझ के आपकी मैं, राज्य कार्य चलाऊँगा।। 96
शीश पे रख के प्रभु की पाँवरी, प्रभु से विदा वे लेते हैं।
जाने की सारी व्यवस्था कर के, अवध के लिए चल देते हैं।।97
अयोध्या पहुँच कर भरत लाल ने, तापस वेष किया धारण।
नन्दीग्राम में कुटिया बनाई, व्रत नियमों का करते पालन।। 98
सादर प्रभु की पाँवरी को, सिंहासन पर रखते हैं।
आज्ञा लेकर प्रतिदिन उनसे, राज्य कार्य करते हैं।। 99
भरत चरित की महिमा को, जो नर नारी सुनते हैं।
सीया राम चरणों में प्रीति होती, भव बन्धन से छुटते हैं।। 100

इति अयोध्याकाण्ड सम्पूर्ण

मानस-रस-धारा



तृतीय सोपान अरण्यकाण्ड

श्याम वर्ण और आनन्द घन, धारण किये हैं अम्बर पीत।
धनुष बाण लिए हाथों में, कटि तरकस से है शोभित।। 1
कमल सम नेत्र विशाल हैं जिनके, मस्तक पर जटाएँ धारण किए।
नमन मेरा उन रघुवर को सिया, अनुज संग वन पथ में चलते हुए।।2
अरण्यकाण्ड में प्रवेश करेंगे, प्रभु पावन चरित को गायेंगे।
उन लीलाओं का दर्शन करेंगे, जो वन में रघुवर दिखायेंगे।। 3
पुष्पों को तोड़ प्रभु निज हाथों, से आभूषण बनाते हैं।
करते है शृंगार, सिया का, शिला पे बैठे सुहाते हैं।। 4
जयन्त ने कौवे के रूप में माँ, चरणों में चंचु प्रहार किया।
रक्त बहा जब प्रभु ने देखा, सरकंडे का बाण चलाय दिया।। 5
शरण मिली न त्रिलोकी में, तब नारद जी ने समझाया।
क्षमा मांगो जाकर रघुवर से, प्रभाव जिन्होंने दिखलाया।। 6
शंकर जी कहते सुनो उमा, कर दिया उसको एक नयन।

प्रभु तो अवश्य करते कृपा, जो लेता है उन की शरण।। 7
अत्रि ऋषि के आश्रम आये, स्तुति ऋषि ने कीन्ही है।
माँ अनुसूया ने सीता को, सुन्दर शिक्षा दीन्ही है।। 8
दिव्य वसन आभूषण दिये, जो नित नूतन रहते हैं।
शरभंग ऋषि पे करके कृपा, सुतीक्ष्ण मुनि से मिलते हैं।। 9
गुरु को प्रभु के दर्शन करा के, वह अपना वचन निभाते हैं।
आनन्दित हो गए अगस्त्य मुनि, जब प्रभु को सामने पाते हैं।। 10
बोले ऋषिवर दण्डक वन जाओ, मुनि गौतम का शाप हरो।
पंचवटी वहाँ सुन्दर स्थल है, उसमें जाकर वास करो।। 11
राह में जटायु से भेंट हुई, प्रभु पंचवटी में आते हैं।
सब प्राणी निर्भय हो गये, मुनियों के दुःख मिट जाते हैं।। 12
लक्ष्मण की जिज्ञासा जान के, उसे भक्ति योग सुनाया है।
ज्ञान नीति आदि की चर्चा से, कुछ काल वहाँ पे बिताया है।।13
रावण की बहिन सूपनखा, एक दिन वहाँ पे आती है।
मनमोहक रूप देख के राम का, वह मोहित हो जाती है।। 14
शिष्टाचार की मर्यादा का, उसने जरा न रखा ध्यान।
प्रभु का पाके संकेत लखन ने, कर दीना उसे बिन नाक कान।। 15
मानो रावण को दी हो चुनौती, खरदूषण को भी मारा है।
पता लगने पर 'यह भगवान हैं' रावण ने मन में विचारा है।। 16
प्रभु की लीला पूर्ति हेतु, सीता अग्नि में समाई हैं।
लखन भी मर्म यह जान न पाये, ऐसी छाया मूर्ति बनाई है।।17
रावण के डर से मामा मारीच ने, स्वर्ण मृग का रूप बनाया है।
सीता को ललचा दोनों भाइयों को, अपने पीछे दौड़ाया है।। 18

तब रावण ने कपटी सन्यासी का वेष बनाया है।
अकेली पाकर सीता को, छल से वह हर लाया है।। 19
सीता को बचाने जटायु आये, उनके पंखों को काट दिया।
प्रभु को सारी घटना सुनाकर, जटायु ने प्राणों का त्याग किया।।20
राक्षस कबंध का कर उद्धार, प्रभु शबरी के आश्रम आते हैं।
प्रेम सहित जो उसने भेंटे, कंद मूल फल खाते हैं।। 21
नवधा भक्ति सुना कर शबरी, माँ का जीवन धन्य किया।
राम का नाम ही श्रेष्ठ है सबसे, नारद ने प्रभु से वचन लिया।।22
प्रभु की इन सब लीलाओं का, जो भी करता है नित गान।
राम कृपा को पा जाता, भक्ति-रस का करता निरन्तर पान।।23

इति अरण्यकाण्ड सम्पूर्ण



मानस-रस-धारा



चतुर्थ सोपान किष्किन्धाकाण्ड

कलिमल नाशक जानकी जीवन, सब सुखों के प्रदाता हैं।
निरन्तर उनको जो है भजता, दुःख कभी न पाता है।। 1
सीता को खोजते खोजते रघुवर, ऋष्यमूक पर्वत पर आते हैं।
भयभीत हुए सुग्रीव ये कौन हैं, हनुमत जी पता लगाते हैं।। 2
आँखों में अश्रु भर आये, जब अपने इष्ट को लिया पहचान।
सीता की खोज हो जायेगी, सुग्रीव का भी होगा कल्याण।। 3
अपने संग उनको ले जाकर, सुग्रीव से मैत्री कराते हैं।
अपने डरने छिपने का कारण, सुग्रीव प्रभु को बताते हैं।। 4
बालि का वध कर के प्रभु, मैत्री धर्म निभाते हैं।
बालि के बेटे अंगद को, युवराज का पद दिलवाते हैं।। 5
सीता का जल्दी पता लगाने, का देते हैं सुग्रीव वचन।
सीता ने जो गिराये थे, देते प्रभु को वे आभूषण।। 6
विषयों में पड़कर सुग्रीव, प्रभु कारज को बिसराते हैं।

तब प्रभु लखन को भेज के उसको, थोड़ा सा भय दिखलाते हैं।। 7
सभी दिशाओं में ढूंढने हेतु, वानरों के कई दल बनाये हैं।
कार्य सफल हो प्रभु चरणों में, सब ने शीश नवाये हैं।। 8
सीता पहचान हेतु हनुमत, प्रभु से अंगूठी पाते हैं।
जामवन्त अंगद संग लेकर, प्रभु कारज करने जाते हैं।। 9
अपनी दूर दृष्टि से संपाति, सीता को देख पाते हैं।
लंकापुरी में अशोक वाटिका, में बैठी हैं बताते हैं।। 10
शत योजन लम्बे सागर को, जो वानर कर पाये पार।
वो प्रभु कारज कर पायेगा, शेष सभी जायेंगे हार।। 11
विशाल सागर को लाँघने में, सब स्वयं को अक्षम पाते हैं।
तब जामवंत हनुमत को उनकी, शक्ति की याद कराते हैं।। 12
राम के काज को करने हेतु, हुआ अवतार तुम्हारा है।
सुनते ही पर्वताकार हुए, वानर दल हर्षित सारा है।। 13

इति किष्किन्धाकाण्ड सम्पूर्ण



मानस-रस-धारा



पंचम सोपान सुन्दरकाण्ड

ज्ञानियों में अग्रणी राम के भक्त, अतुलित बल के हैं जो धाम।
सुन्दरकाण्ड को गायेंगे गुणधाम, हनुमत को कर के प्रणाम।। 1
जामवन्त के वचन सुहाये, समुद्र लाँघने को हुए तैयार।
प्रतीक्षा करो जब तक न लाऊँ, सीता दर्शन का समाचार।। 2
मैनाक पर्वत बोले भाई, कर लो मुझ पे थोड़ा विश्राम।
उसे छुआ प्रणाम किया बोले, चैन कहाँ बिन राम के काम।। 3
सुरसा लंकिनी आदि निशिचरियों, ने की बल बुद्धि परख।
बल बुद्धि निधान देख के, मन में उनके अपार हरष।। 4
ढूंढते ढूंढते सीता मैया को, विभीषण से हुआ है मिलन।
राम भक्त को सामने पाकर, मिट गई उनकी सारी तपन।। 5
उन से पता सीता का पाकर, दर्शन करने जाते हैं।
पर देखा वहाँ रावण आकर, सीता को त्रास दिखाते हैं।। 6
रावण गया तो मुद्रिका दी, राम गुणों को सुनाया है।

सारी राम कथा को सुनकर, मन आनन्दित हो आया है।। 7

दर्शन किया प्रसन्न हुए, राम लखन की कुशल सुनाई है।

फिर भूख लगी कह फल खाने की, सीता से अनुमति पाई है।। 8

फल खाना तो बहाना था, राक्षसों का संहार किया।

अक्षय को मारा तब मेघनाद ने, नाग पाश में बाँध लिया।। 9

रावण के सामने जाकर अपने, प्रभु के गुणों को गाया है।

सीता राम को वापिस लौटा दो, परामर्श अपना सुनाया है।। 10

रावण के कहने पर दैत्यों ने, पूँछ में आग लगाई है।

तो राम प्रभाव दिखाने को, सारी लंका जलाई है।। 11

एक विभीषण का घर न जलाया, उन को तो प्रिय हैं प्रभु के चरण।

हनुमत जले न दूत हैं उनके, जिन्होंने किया अग्नि का सृजन।। 12

पूँछ बुझाकर सीता माँ को, जाकर शीश नवाया है।

जाते हुए माँ की चूड़ामणि को, निशानी रूप में पाया है।। 13

सीता मैया जब दु:खी हुई, तो बोले प्रभु शीघ्र आयेंगे।

राक्षसों सहित रावण को मार के, संग आपको अपने ले जायेंगे।। 14

समुद्र पार कर वापिस लौटे, देख वानर हर्षाये हैं।

हनुमत को खुश देख समझ गये, प्रभु कारज कर आये हैं।। 15

अंगद की सम्मति से, मधुवन के मीठे फल खाते हैं।

रोकने वाले रखवालों को, घूंसों से मार भगाते हैं।। 16

सूचना पाकर सुग्रीव हैं हर्षित, ये सीता का पता लगा आये।

सब को अपने संग में लेकर, प्रभु के दर्शन हैं पाये।। 17

आपकी कृपा से हनुमत ने, सीता का दर्शन पाया है।

यह सुन रघुवर प्रसन्न हुए, हनुमत को गले लगाया है।। 18

सीता मैया की चूड़ामणि दी, सारा हाल सुनाया है।
मेरे प्रभु ने अपने आप को, हनुमत का ऋणी बताया है।। 19
सागर लाँघा, मैया को देखा, यह सब आपकी कृपा का फल।
स्वामी! बन्दर की न बढ़ाई, न ही उसमें है कुछ बल।। 20
हनुमान को अपनी भक्ति दी, सब वानरों ने जय घोष किया।
समुद्र तट पर जाने हेतु, प्रभु ने सब को संग लिया।। 21
सागर तट पर आगये प्रभु सुन, मन्दोदरी घबराती है।
सीता देने में ही भलाई, पति रावण को समझाती है।। 22
हँसी में टाल के पत्नि की बात को, रावण सभा में आते हैं।
वानर मनुज को जीतना मुश्किल, नहीं है मंत्री बताते हैं।। 23
मन्त्री वैद्य गुरु ये तीनों, जब ठकुरसुहाती गाते हैं।
तो राज्य शरीर धर्म ये तीनों, शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।। 24
विभीषण भी आकर समझाते हैं, सीता देने में हित है तुम्हार।
पर उस को बात समझ में न आई, लात से उस पे किया प्रहार।। 25
उमा सुनो संत की यह बढ़ाई, अहितकारी का भी हित करते हैं।
स्वामी! तभी कल्याण तुम्हारा, जो आप राम को भजते हैं।। 26
लंका छोड़ विभीषण तब, प्रभु की शरण में जाते हैं।
शरणागत की रक्षा करना, प्रभु अपना धर्म बताते हैं।। 27
नीर मंगा कर सागर से, विभीषण का राजतिलक किया।
समुद्र को कैसे पार करें, उनसे है परामर्श लिया।। 28
तीन दिनों तक तट पे बैठ के, प्रभु ने समुद्र का वंदन किया।
प्रतिक्रिया जब नहीं हुई तो, क्रोध से धनुष उठाय लिया।।29
डर कर प्रकट हुए सागर, सेतु बंध उपाय सुनाया है।

नल नील के स्पर्श से पाहन तरेंगे, प्रभु को उन्होंने बताया है।। 30
यह मत राम जी के मन भाया, सिंधु वापिस जाते हैं।
भवसिंधु से तरते वे जो, रघुनायक गुण गाते हैं।। 31

इति सुन्दरकाण्ड सम्पूर्ण





मानस-रस-धारा



षष्ठ सोपान लंकाकाण्ड

भव भय हर्ता योगीश्वर, मायातीत गुणों के धाम।
लंकाकाण्ड को गायेंगे, ऐसे प्रभु को कर के प्रणाम।। 1
सिंधु वचन सुन रघुवर बोले, देरी का अब नहीं कोई काम।
सेतु बनाओ उतरें पार, तब तक लेना नहीं विश्राम।। 2
सहायता पाकर वानरों की, नल नील ने सेतु निर्माण किया।
यहाँ करेंगे स्थापित शिवलिङ्ग, मन में प्रभु ने सकंल्प लिया।। 3
मुनियों की सन्निधि में शिवलिङ्ग, स्थापित कर के पूजा की।
शिव जी मुझ को बहुत प्रिय हैं, शिव द्रोही मम भक्त नहीं।। 4
मेरे द्वारा स्थापित शिवलिङ्ग, रामेश्वर कहलायेगा।
गंगा जल जो इस पे चढ़ाये, सायुज्य मुक्ति पायेगा।। 5
नल और नील ने सेतु बांधा, यह तो नहीं है कोई करामात।
डूबने वाले पाहन तैरे, यह तो रघुवर का है प्रताप।। 6

प्रभु की आज्ञा पाकर सारी, सेना समुद्र के पार गई।
मीठे मीठे फलों को खाओ, डेरा डाल प्रभु आज्ञा दई।। 7
सेतु बन्ध की सूचना पाके, रावण मन में घबराया है।
महल गया तो पत्नि मंदोदरी ने उसे समझाया है।। 8
धरा बोझ हरने के हेतु, प्रभु ने है अवतार लिया।
तुम्हारी भलाई इसी में है, सौंप दो उनको जाके सिया।। 9
काल के वश वह अपने आप को, सब से बड़ा योद्धा पाता है।
उसका पुत्र प्रहस्त भी आकर, नीति की बात बताता है।। 10
राम सरीखा शत्रु प्रबल है, फिर भी न उसके मन में त्रास।
भोग विलास में डूबा हुआ है, विजय की लगाए हुए हैं आस।। 11
अपने ही डेरे से प्रभु ने, एक ही बाण चलाया है।
जिसने मन्दोदरी का कर्णफूल, रावण का मुकुट गिराया है।।12
ऐसा करके राम का बाण, वापिस तरकस में आया है।
अमंगल जान के मंदोदरी ने, रावण को समझाया है।। 13
सारा विश्व है उनमें समाया, उन के चरणों में रख दो माथ।
रो रो कर विनती करती है, अखंड करो मेरा अहिवात।। 14
कितना ज्ञानी भी गुरु मिल जाये, पर मूर्ख हृदय में न होती चेत।
अमृत सा जल बरसाते बादल, फूलता फलता तदपि न बेंत।। 15
प्रातः जब जागे रघुराई, सब सचिवों को बुलाया है।
अंगद को दूत बना कर भेजो, परामर्श सब का पाया है।। 16
प्रभु के कार्य तो स्वयं सिद्ध है, पर आदर मुझे दिलवाया है।
राम कृपा को पाकर अंगद, का मन अति हरषाया है।। 17
अंगद से सब भयभीत हुए, बिन पूछे मार्ग बताया है।

धीर वीर बलराशि अंगद, रावण सभा में आया है।। 18
रावण ने तर्कों कुतर्कों से, अंगद का उपहास किया।
पर बुद्धिमता से अंगद ने, उसको आड़े हाथों लिया।। 19
राम की निंदा की रावण ने, तो अंगद ने जोर से पटका पैर।
धरती हिली सभासद भागे, अब न यहाँ रहने में खैर।। 20
रावण गिरते गिरते बचा पर, मुकुट नीचे गिर जाते हैं।
क्रोध में बोला पकड़ लो बंदर, सुन अंगद मुस्काते हैं।। 21
प्रभु के प्रताप का करके स्मरण, अंगद पैर टिकाते हैं।
बोले गर कोई इसे हटाये तो, हम सीता को हार जाते हैं।। 22
मेघनाद सहित सब ने, अपने बल को आजमाया।
पूरी ताकत लगा कर भी कोई, टस से मस न कर पाया।। 23
सिर नीचे कर सब हैं बैठे, तब दशकंधर आते हैं।
पैर पड़ो प्रभु श्री राम के, अंगद पैर हटाते हैं।। 24
अनेक प्रकार की नीति बताकर, अंगद वापिस आ जाते हैं।
लंका किले के भेदों को, श्रीराम प्रभु को बताते हैं।। 25
आक्रमण की रणनीति बनाई, लंका में कर दी चढ़ाई है।
सारी वानर सेना राम का, जय घोष करते आई है।। 26
राम के प्रबल प्रताप से वानर, सब राक्षस मार भगाते हैं।
लंका में हाहाकार मचा सब, रावण को गाली सुनाते हैं।। 27
माल्यवंत रावण के नाना, उस को निज सीख सुनाते हैं।
राम विमुख कोई सुख न पाता, राम को काल बताते हैं।। 28
पवनतनय हनुमान ने भी, रावण की सेना को किया बेहाल।
मेघनाद पर पर्वत छोड़ा पर, उस ने बिछा दिया माया जाल।।29

देख यह राम जी मुसकाये, बाण से काटी सब माया।
लक्ष्मण भी रणक्षेत्र में आ गये, जब प्रभु से अनुमति को पाया।। 30
लखन का पराक्रम मेघनाद के, प्राणों पर जब हुआ भारी।
तब मेघनाद ने लक्ष्मण को, वीरघातिनी शक्ति है मारी।। 31
देख के मूर्छित अपने अनुज को, करुणानिधि प्रभु अकुलाते हैं।
जामवंत के कहने से हनुमत, सुषेण वैद्य को लाते हैं।। 32
वैद्य ने जो औषध है बताई, हनुमत लेने जाते हैं।
सूरज उगने से पहले औषधि, लाना जरूरी बताते हैं।। 33
लौट रहे संजीवनी लेकर, भरत जी बाण चलाते हैं।
सारी घटना सुन के भरत जी, मन में बड़ा दुःख पाते हैं।। 34
रात बीतने को है आई, हनुमत जी तो नहीं आये।
मेरे प्रभु भी शोक में डूबे, वानर भी अति घबराये।। 35
उसी समय हनुमान जी आगए, वैद्य ने किया तुरंत उपचार।
प्रभु ने अनुज को गले लगाया, सब में छाया हर्ष अपार।। 36
रावण ने सिर पीट लिया, पाया उसने जब यह समाचार।
कुम्भकरण को जगाया सब कुछ, बताया उसको सविस्तार।। 37
जगदम्बा हर लाये हो, होगा तुम्हारा कैसे भला।
आखिरी बार गले मिल लो, रणभूमि में मैं तो हूँ अब चला।। 38
नेत्र सुफल भये प्रभु दर्शन से, विभीषण को गले लगाया है।
भाई काल के वश पर तुमने, कुल का मान बढ़ाया है।। 39
पर्वत जैसी देह वाले, कुम्भकरण युद्ध भूमि में आते हैं।
किलकिलाकर सारे वानर, पर्वतों वृक्षों से मारते हैं।। 40
जब उस पर न असर हुआ, हनुमत घूंसा मारते हैं।

पर वह हनुमत सुग्रीव नल नीलादि, सब वानरों को पछाड़ते हैं।। 41
करोड़ो वानर पेट में डाले, करोड़ो को उसने दिया मसल।
देवता सिद्ध भयभीत हुए, वानरों में मच गई हलचल।। 42
सारंग धनुष को हाथ में लेकर, करुणाकर प्रभु ने चलाये बाण।
भुजाएँ काटी फिर सिर काटा, दे दिया प्रभु ने उसे निर्वाण।। 43
सूचना पाकर हुआ रावण आकुल, मेघनाद ने बंधाया धीर।
कल मेरे हाथों राम लखन संग, मरेगी सब वानरों की भीड़।।44
मायामय रथ पर चढ़कर, मेघनाद आकाश में जाते हैं।
शक्ति शूल कृपाण आदि अस्त्रों शस्त्रों को बरसाते हैं।। 45
सब बलशाली वानर मिलकर भी, उसको हरा न पाते हैं।
तब क्रोधित होकर लक्ष्मण उसकी, छाती में बाण चलाते हैं।। 46
मेघनाद के मरने पर, देवता फूल बरसाते हैं।
स्तुति करते हुए सिद्ध और देव, प्रभु का पावन यश गाते हैं।।47
अब अभिमानी रावण ने, आकर प्रभु को ललकारा।
आज मेरे हाथों से तू, भाई संग जायेगा मारा।। 48
प्रभु ने उसके दस सिर काटे, भुजाएँ भी काटी सारी।
पर फिर वे सब नये लग जाते, समस्या आन पड़ी भारी।। 49
मायावी रावण ने अपने, सारे प्रयोग किए छल बल।
पर मेरे रघुवर के सामने, ठहर न पाये वे एक भी पल।। 50
रावण की नाभि में अमृत कुण्ड है, विभीषण प्रभु को बताते हैं।
तब प्रभु बाण से पहले उस, अमृत कुण्ड को ही सुखाते हैं।। 51
फिर रावण के सिरों और भुजाओं, पर चलाए हैं तीस बाण।
'राम कहाँ है' यह कहकर, रावण ने दे दिये अपने प्राण।। 52

अपना लक्ष्य पूरा करके, बाण तरकस में आते हैं।
देवों ने दुन्दुभि बजाई, मुनि जयकार लगाते हैं।। 53
सीता जी आयीं तो प्रभु ने, अग्नि परीक्षा का दिया आदेश।
अग्नि चन्दन सम शीतल हुई, ताप हुआ न सीता को लेश।। 54
हर्षित देवों ने सुमन बरसाये, ब्रह्मा शिव सब ने किया स्तुतिगान।
विभीषण हनुमत व मित्रों संग, अयोध्या के लिए किया प्रस्थान।। 55
प्रयाग में पहुँचे, हनुमत भेजे, बतलाने प्रभु आने का समाचार।
ऐसे प्रभु का नाम भजे बिन, और नहीं है कोई आधार।। 56

इति लंकाकाण्ड सम्पूर्ण



श्री गणेशाय नमः श्री सीतारामाभ्याम् नमः

मानस-रस-धारा



सप्तम सोपान उत्तरकाण्ड

पीताम्बर धारी कमलनयन, कर कमलों में धनुष और बाण।
विमानारूढ़ रघुवर को नमन, अब करेंगे उत्तरकाण्ड का गान।। 1
राम के लौटने की अवधि में, एक दिन का रह गया अब इन्तजार।
भरत के शुभ अङ्ग फड़कने लगे, मन में छाया हर्ष अपार।। 2
पर आये नहीं, प्रभु भूल गये क्या, मुझ को कुटिल और कपटी जान।
मुझ सा अधम न होगा कोई, बीते अवधि जो रहते प्राण।। 3
राम विरह के सागर में, डूब रहा था भरत का मन।
आये बचाने मानो नाव बन, राम के भक्त केसरी नंदन।। 4
मैं रघुपति का किंकर हूँ, हनुमान भरत से कहते हैं।
प्रेम से गले लगाया उनको, आँखों में अश्रु बहते हैं।। 5
ज्यों ही सबने पाया है, प्रभु के आने का शुभ समाचार।
जो जैसे था वैसे ही दौड़ा, करने अपने प्रभु का दीदार।। 6
धर्म धुरंधर रघुवर ने पहले, गुरुवर को शीश नवाया है।

फिर चरणों में लोटे भरत को, प्रेम से गले लगाया है।। 7
सब को देख के प्रेमातुर, रघुनंदन ने किया एक चमत्कार।
एक ही साथ सब को मिले, असंख्य रूपों को करके धार।। 8
वैदेही भी सब माताओं के, चरणों में शीश नवाती है।
अखण्ड सौभाग्य तुम्हारा हो, आशीषें सब से पाती है।। 9
आरती करती, निछावर करतीं, माताएँ फूली न समाती हैं।
सुकुमारों के पराक्रम को सुन, परमानंद को पाती हैं।। 10
हनुमत आदि सब कपियों ने, मानव रूप को धार लिया।
प्रेम से प्रभु ने सखाओं का, परिवार में सब को परिचय दिया।। 11
अवधपुरी में आनन्द छाया, मंगल के लिए बाँधे बन्दनवार।
ध्वजाएँ पताकाएँ भी सजी, स्वर्ण कलश हैं सब के द्वार।। 12
गुरु वसिष्ठ ने विप्र बुलाए, कहा सब से घड़ी है यह सुन्दर।
आज्ञा दो सिंहासन पे विराजे, आनन्ददायी श्री रघुवर।। 13
गुरु ने दिव्य सिंहासन मंगाया, जिसका तेज है सूर्य समान।
उस पर सीता राम विराजे, तीनों लोकों में हुआ जय गान।। 14
प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा, फिर विप्रों को आज्ञा दी।
माताओं ने आरती उतारी, रघुवर सिया की बलैंया ली।। 15
नगाड़े बजे, अप्सरायें नाचीं, देव सुमन बरसाते हैं।
सारा परिवार सारे सखा, सब अवधवासी सुख पाते हैं।। 16
बंदी वेष में वेद भी आकर, राम गुणों को गाते हैं।
शंकर भी स्तुति गाकर के, हर्षित हो कैलाश पे जाते हैं।। 17
कुछ दिन अपनी चरण शरण में, रख के सखाओं को दी है विदा।
हनुमत तो रघुवर के प्यारे, रहते उन के पास सदा।। 18

राम के राज्य में सभी सुखी हैं, प्रेम का भाव सब में परस्पर।
सब राम भक्ति के हैं परायण, दुःखी नहीं कोई नारी और नर।। 19
प्रकृति भी अनुकूल है सबके, मर्यादा में है सागर।
रामचन्द्र के राज्य में, शुभकारी मेघ, भानु, हिमकर।। 20
अवधपुरी की संपदा का शेष शारद भी न कर सकते बखान।
हरषित सब नर नारी हैं, पाकर सुर दुर्लभ भोगों की खान।। 21
सीता के दो पुत्र हुए, लव कुश नाम बड़े सुन्दर।
राम का ही प्रतिबिम्ब हैं मानों, विजयी, विनयी और गुण मन्दिर।। 22
भरत लखन रिपुदमन ने भी, दो दो पुत्रों को पाया।
सभी सुशील सुन्दर गुणकारी, रघुवंश में आनन्द छाया।। 23
लक्ष्मीपति जहाँ स्वंय राजा हैं, उस पुरी का कैसे करें वर्णन।
परमानन्द मग्न हैं सारे, कर श्री राम के शुभ दर्शन।। 24
सनकादि मुनि भी एक बार, प्रभु दर्शन को आते हैं।
अनपायनी भक्ति पाकर, ब्रह्म लोक सिधाते हैं।। 25
भरत के पूछने पर प्रभु संत, असंत का भेद बताते हैं।
संत पर दुःख से दुःखी हैं होते, पर सुख से सुख पाते हैं।। 26
संत असंतो की ऐसी करनी, जैसे चन्दन और कुठार।
कुठार काटता चन्दन को पर, वह भरता उसमें सुगन्ध अपार।। 27
गुरु द्विज पुरवासी सब बुलाए, श्री रघुनाथ ने एक बार।
बोले मानव तन सुर दुर्लभ है, साधन धाम मोक्ष का द्वार।। 28
विषयों में न इसको गवाना, सद्गुरु की लेना अवश्य शरण।
नर तन पाकर भव सिंधु तरने का, करना होगा तुमको यतन।। 29
मेरे प्रभु ने भक्ति का मार्ग, सुलभ सुखकारी बताया है।

सत्संग बिना भक्ति न मिलती, संतों की महिमा को गाया है।।30
मन वाणी और कर्म से, जो करते विप्र पद पूजा।
रघुवर बतलाते हैं सबको, पुण्य यही है नहीं दूजा।। 31
अपना एक गुप्त मत भी, दोनों हाथ जोड़ बताया है।
शंकर भजन बिना मेरी, भक्ति को कोई न पाया है।। 32
ऐसी सुन्दर सीख के दाता, केवल तुम हो असुरारि।
आप और आपके सेवक ही हैं, स्वार्थ रहित और उपकारी।। 33
आज्ञा लेकर प्रभु गुण गाते, हुए सब निज गृह जाते हैं।
अयोध्या के सब नर नारी, स्वंय को कृतार्थ पाते हैं।। 34
भव सागर से तरने को, राम कथा दृढ़ नौका है।
मानव तन को पाकर के ही, मिलता यह सुन्दर मौका है।। 35
शंकर जी बोले सुनो उमा, राम चरित की महिमा अपार।
शारदा भी उसे गा नहीं सकती, वेद भी पायें न उस का पार।। 36
राम अनन्त अनन्त गुण उनके, कुछ ही गुण मैंने गाये।
राम शरण में रहने वाला, अनपायनी भक्ति पाये।। 37
अनपायनी भक्ति बड़ी दुर्लभ है, विरला ही कोई पाये प्राणी।
काग ने उसको कैसे पाया, जो अनंत गुणों की है खानी।। 38
तब कागभुसुण्डि गरुड़ संवाद, शंकर उमा को सुनाते हैं।
सुनकर राम कथा अति पावन, संदेह गरुड़ के मिट जाते हैं।। 39
भक्तिवन्त अति नीच भी प्राणी, मेरे राम को प्यारा है।
हर पल प्रभु का नाम सिमरन ही, भक्ति का आधारा है।। 40
प्रभु को पाने के जितने साधन, वेदों ने हैं बतलाये।
उन सब का फल हरि भक्ति है, कोई विरला ही इस को पाये।। 41

सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, कहलाते ये युग हैं चार।
केवल कलियुग ही कहलाता, पाप और अवगुण का भंडार।। 42
कलियुग में एक गुण है विलक्षण, जो इसकी महिमा बढ़ाता है।
नाम का ही लेके आधार, प्राणी भव से तर जाता है।। 43
जल मथने से घी मिल जाये, रेत से भले मिल जाये तेल।
बिन हरि भजन न भव कोइ तरता, यह तो है सिद्धान्त अपेल।। 44
राम का ही करना है गान, राम का ही करना है स्मरण।
हरि भक्ति मिल जायेगी, निरन्तर करो राम गुण का श्रवण।। 45
राम का नाम अति पावन है, तुलसी मन को समझाते है।
राम को भजकर अधम प्राणी भी, परम गति को पाते हैं।। 46
राम को भजने वाला प्राणी, पा जाता है परम विश्राम।
मन उसका पावन हो जाता, सब में देखता सीता राम।। 47
राम कृपा से ही निर्मल ने, मानस का किया संक्षेप में गान।
श्रद्धा प्रेम से जो गायेंगे, भवसिन्धु उन्हें गोपद के समान।। 48

इति उत्तरकाण्ड सम्पूर्ण





श्रीरामायणजी की आरती

आरति श्रीरामायण जी की। कीरति कलित ललित सिय पी की।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।

गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की।।

गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड के ही की।।

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।।